मोण्टीसोरी शिक्षा-पद्धति

लेखक

बंसीधर
संचालक, बाल-निकेतन, जोधपुर

पद्मारानी वैश्य
मंत्रिणी, महिला जागृति परिषद्,
बीकानेर

प्राक्कथन-लेखक

काशीनाथ त्रिवेदी
(भूतपूर्व शिक्षामंत्री, मध्यभारत)

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय
बनारस

अनुक्रम

—:x:—

प्राक्कथन

मोण्टीसोरी-पद्धति के सम्बन्ध में आज अनेक प्रकार के भ्रम फैले हुए हैं। शिक्षित-अशिक्षित, अमीर-गरीब सभी इन भ्रमों के शिकार बने हुए हैं। माता-पिता इससे एक अपेक्षा रखते हैं, शिक्षक दूसरी और समाज तीसरी। कई ऐसे हैं, जो विदेशी पद्धति मान कर इस की उपेक्षा और अवगणना करते हैं। दूसरे कई इस के खर्चीलेपन की शिकायत करते हैं। कुछ को स्वतंत्रता, स्वावलम्बन और स्वयंस्फूर्ति के इसके तत्त्व पसन्द नहीं पड़ते। कुछ हैं, जो मानते हैं कि सजा, इनाम, लालच और भय के बिना बच्चों को ठीक से पढ़ाया ही नहीं जा सकता—उन्हें मोण्टीसोरी-पद्धति से शिकायत है कि यह बच्चों को बहुत ज्यादा सिर चढ़ानेवाली और उन्हें अनुचित स्वतंत्रता देनेवाली पद्धति है। किसी को इस के साधन खर्चीले मालूम होते हैं, तो किसी को इन्द्रिय-विकास के लिए नियोजित इस के वैज्ञानिक साधन अनावश्यक प्रतीत होते हैं। कोई समझता है कि यह अमीरों के बच्चों का मन बहलाने और समय काटने की एक रीति है, तो कोई इस में खेल ही खेल देख कर

इस की उपयोगिता के बारे में शंकाशील हो उठते हैं। इस प्रकार जितने दिमाग, उतने खयाल ले कर लोग इस पद्धति के सम्बन्ध में अपने विचार बनाते हैं; और जिसकी जैसी भावना होती है, उसके अनुसार वह इसे भली या बुरी मानता है। इस पुस्तक में मोण्टीसोरी-पद्धति को सूत्रों की भाषा में समझाने का सफल प्रयत्न किया है। आजकल के व्यस्त जीवन में इस प्रकार के सूत्रात्मक साहित्य की बड़ी जरूरत है। आशा है, बाल-शिक्षा-प्रेमी पाठकों को इस पुस्तक में काफी काम की सामग्री मिलेगी और इसकी सहायता से वे मोण्टीसोरी-पद्धति के विषय में अपनी धारणाओं को अधिक स्पष्ट और व्यवस्थित कर सकेंगे।

—काशीनाथ त्रिवेदी

मोण्टीसोरी शिक्षा-पद्धति

१

* *

माता मोण्टीसोरी

माता मोण्टीसोरी जगत् विख्यात शिक्षाशास्त्री, प्रसिद्ध मानसशास्त्री, उच्चकोटि की दर्शनशास्त्री, जन्मजात शिक्षक, गंभीर विचारक, सिद्धहस्त लेखक, प्रभावशाली वक्ता तथा प्रतिभा सम्पन्न व क्रांतिकारी महिला थीं। कुशल डाक्टर होते हुए भी आपने डाक्टरी को तिलांजलि दी और बाल-सेवा को अपने जीवन का ध्येय बनाया। बालक की महानता और महत्ता में आपको अगाध श्रद्धा थी। बालक को आप नन्हा जगत् गुरु और मसीहा मानती थीं। आप का दृढ़ विश्वास था कि स्वतंत्र व स्वस्थ वातावरण में लालित-पालित और शिक्षित-विकसित बालक ही आज की पथभ्रष्ट दुनिया को सही रास्ता दिखा सकता है तथा

विश्वप्रेम के आधार पर एक शोषणहीन नव समाज का निर्माण कर सकता है। इसीलिए आप जीवन पर्यन्त ब्रह्मचारिणी रहीं और रात-दिन बालक का संदेश विश्व के कोने-कोने में फैलाने में तल्लीन रहीं।

आपकी स्वतंत्र बाल-शिक्षा-पद्धति इतनी प्राकृतिक, स्वाभाविक और वैज्ञानिक है कि अन्य कोई पद्धति इसका मुकाबला नहीं कर सकती। आप सर्वप्रथम शिक्षाशास्त्री थीं जिन्होंने विकास के लिए जन्म से ले कर छः साल तक के समय को सब से महत्त्वपूर्ण बताया। प्रचलित शिक्षा-प्रणाली की आपने तीव्र आलोचना की और घोषणा की कि शिक्षा का अर्थ ऊपर से लादना नहीं बल्कि प्राकृतिक नियमों के अनुसार बालक की रुचि व अरुचि को ध्यान में रखते हुए उस के विकास में सहायता करना है। निस्संदेह बाल-शिक्षा-क्षेत्र में जो अद्वितीय कार्य आपने किया वह इतिहास में सदा अमर रहेगा।

माता मोण्टीसोरी का जन्म सन् १८७० में इटली के एक छोटे-से गाँव में हुआ था। आप के माता-पिता की स्थिति अत्यन्त साधारण थी। आप अपने माता-पिता की इकलौती लड़की थीं। आप के माता-पिता आप से बहुत प्यार करते थे।

उस समय स्त्रियों की दशा बड़ी दयनीय थी। उनका समाज में कोई स्थान नहीं था। सब जगह उन्हें बड़ी हेय दृष्टि से देखा जाता था। उच्च शिक्षा के द्वार उनके लिए बिल्कुल बन्द थे। शिक्षिका के सिवा वे और कुछ नहीं बन सकती थीं। कहने का मतलब यह है कि उस समय समाज में स्त्रियों का कोई आदर सत्कार नहीं था। उन का जीवन गुलामी का जीवन था। स्वतंत्र रूप से वे न कुछ सोच सकती थीं और न कुछ कर सकती थीं। ऐसी हालत में किसी स्त्री का उस समय उच्च शिक्षा प्राप्त करना कितना कठिन होगा, इसकी केवल कल्पना ही की जा सकती है।

इतना होने पर भी माता मोण्टीसोरी को शाला में दाखिल करवाया गया। शाला में स्वतंत्र रूप से लड़कियों का पढ़ना उस समय टेढ़ी खीर थी। लड़के उन्हें खूब चिढ़ाते और तंग करते थे। बात-बात में उन का अपमान करते थे, मजाक उड़ाते थे। उन्हें शान्ति से कक्षा में नहीं बैठने देते थे। शाला के अन्दर और बाहर उन का जीवन सुरक्षित नहीं था। ऐसी हालत में अकेली लड़की को शाला में भेजना बड़ा खतरनाक था। इसलिए माता मोण्टीसोरी के माता-पिता को आप को लाने और

ले जाने के लिए दो बार शाला जाना पड़ता था। सुबह आप की माता आप के साथ जाती थीं और शाम को आप के पिता छुट्टी के बाद अपने साथ लाते थे। पढ़ाई के समय आप को कक्षा में लड़कों से अलग बैठना पड़ता था। नाश्ते और विश्राम के समय आप को एक बन्द कमरे में रहना पड़ता था जिसके बाहर पुलिस का पहरा रहता था। शाला में रहते हुए आप को रोजाना ऐसी विषम परिस्थितियों में से गुजरना पड़ता था। लेकिन आप इन कठिनाइयों और कष्टों की तनिक भी परवाह न करती थीं। आप तो हर समय अध्ययन में लगी रहती थीं और लड़के क्या करते और कहते हैं इस ओर ध्यान ही नहीं देती थीं। आप के इस साहस को देख कर सब को दाँतों तले उँगली दबानी पड़ती थी। आप की इच्छा-शक्ति इतनी प्रबल और बुद्धि इतनी तीव्र थी कि कोई आप की तरफ आँख उठा कर नहीं देख सकता था। इस से स्पष्ट हो जाता है कि बचपन से ही आप में साहस और प्रतिभा की कमी नहीं थी।

गणित में आप की बड़ी रुचि थी। कठिन से कठिन प्रश्नों को आप फौरन हल कर लेती थीं। आप के शिक्षक यह देख कर चकित रह जाते थे। गणित में इतनी रुचि

होने के कारण आप इंजीनियर बनना चाहती थीं। लेकिन उस समय की कठिनाइयों व बाधाओं को ध्यान में रखते हुए आप ने इंजीनियर बनने का ख़्याल छोड़ दिया और डाक्टर बनने का निश्चय किया। समस्त बाधाओं और विघ्नों पर विजय प्राप्त करके आप ने सन् १८९६ में एम० डी० की डिग्री प्राप्त की। इटली में आप सर्वप्रथम महिला डाक्टर थीं।

परीक्षा पास करते ही आप स्त्री सुधार के काम में लग गईं। स्त्रियों की दशा सुधारने के लिए आपने जबरदस्त आन्दोलन किया जिसके फलस्वरूप वर्षों से पद-दलित और पीड़ित स्त्री समाज में जाग्रति की लहर दौड़ गई। उन्हें अपने अधिकारों का भान हुआ। भेड़-बकरियों की तरह जिन्दगी बसर करना उन्हें बुरी तरह खटकने लगा। स्त्री समाज पर होनेवाले अन्याय-अत्याचार के खिलाफ वे आवाज बुलन्द करने लगीं। माता मोण्टीसोरी की ख्याति बढ़ने लगी। बर्लिन में होनेवाली महिला-परिषद् का इटली की तरफ से आप को प्रतिनिधि चुना गया। इस परिषद् में भाग लेने के लिए आप बर्लिन गईं। परिषद् में आप ने जो प्रभावशाली और विचारोत्तेजक भाषण दिया उसे सुन कर सब आश्चर्यचकित

हो गए। यूरोप के समस्त प्रसिद्ध पत्रों ने आपके विचारों का खूब प्रचार व प्रसार किया और आप को 'सूर्य किरण' बतलाया। इसके बाद लंदन-महिला-परिषद् में भी आपने इटली की स्त्रियों का प्रतिनिधित्व किया और अपने क्रांतिकारी विचारों से सब को मंत्रमुग्ध कर दिया, जिस के फलस्वरूप आप का लंदन में खूब स्वागत हुआ।

१८९७ में रोम के प्रसिद्ध मानसिक चिकित्सालय में आप की सहायक डाक्टर के रूप में नियुक्ति हुई। इस पद पर आरूढ़ होनेवाली समस्त यूरोप में आप प्रथम महिला थीं। डाक्टर बन कर आपने दिन-रात खूब परिश्रम किया और रोगियों की खूब सेवा की। कर्तव्यपरायण और जिम्मेवार होने के कारण थोड़े ही दिनों में आप खूब प्रसिद्ध हो गईं। आप रोगियों के साथ अत्यन्त स्नेह और सहानुभूति से पेश आती थीं। उन का आधा रोग तो आप के मधुर व्यवहार से ही दूर हो जाता था। जिन रोगियों के पास दवाई खरीदने के लिए पैसा नहीं होता था उन्हें अपने पास से दवाई देती थीं। जो रोगी बहुत ही निर्धन और बेघर-बार होते थे, उन्हें आप अपने पास रखती थीं और उनकी सारी व्यवस्था अपने आप ही करती थीं। उन दिनों आप काम में इतनी रत रहती

थीं कि विश्राम का नाम न लेती थीं। आपकी धुन और लगन देखते ही बनती थी। मानसिक चिकित्सालय में काम करते हुए आप पागलों और पागलों के साथ रहने वाले मंदबुद्धि और विकृत बालकों के सम्पर्क में आईं। उन बालकों की दुर्दशा देख कर आप का मातृ हृदय द्रवित हो उठा। आप उन के सुधार के उपाय सोचने लगीं। उसी समय आप को ज्ञात हुआ कि डाक्टर सेगुहन और इटार्ड ने मंदबुद्धि बालकों के सुधार के लिए बड़ी खोज की है। इसलिए आपने इन दोनों के साहित्य को गहराई से पढ़ डाला। इस से आप को बड़ा लाभ हुआ और इस दिशा में और आगे बढ़ने की प्रेरणा मिली। अध्ययन, चिन्तन और मनन करते-करते आप को दृढ़ विश्वास हो गया कि मंदबुद्धि और विकृत बालकों को सुधारने का उपाय औषधि नहीं बल्कि शिक्षा है। आप को भलीभांति यह स्पष्ट हो गया कि मंदबुद्धि और मूढ़ बालकों को सुन्दर व स्वस्थ वातावरण में रख कर उन की शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था की जाय तो ये बच्चे बड़े अच्छे नागरिक बन सकते हैं। यह विचार आते ही आप बड़ी तन्मयता और तत्परता से इस काम में संलग्न हो गईं।

इन्हीं दिनों १८९३ में ट्यूरिन की मैडिकल कांग्रेस में आप ने भाग लिया। इस कांग्रेस में बोलते हुए आप ने स्पष्ट शब्दों में निर्भीकतापूर्वक घोषणा की कि मंदबुद्धि और मूढ़ बालकों की दयनीय दशा के लिए समाज और डाक्टर ही जिम्मेवार हैं। उन्हीं दिनों आस्ट्रेलिया की रानी को एक पागल ने मार डाला था। उस की हत्या के लिए भी आप ने डाक्टरों को ही जिम्मेवार ठहराया। अपने अनुभव और अध्ययन के आधार पर आप ने सिद्ध किया कि मंदबुद्धि और विकृत बालकों को सुधारने का तरीका औषधि नहीं बल्कि शिक्षा है। इसलिए ऐसे पिछड़े हुए बालकों को अस्पतालों में न रख कर मनोवैज्ञानिक ढंग से चलनेवाली शालाओं में रखना चाहिए। आप के इन क्रान्तिकारी विचारों को सुन कर सब दंग रह गए। यूरोप के पत्रों ने आप के इन विचारों की बड़ी प्रशंसा की और इनका प्रचार करने के लिए सारगर्भित लेख लिखे।

इस कांग्रेस के बाद माता मोण्टीसोरी की ख्याति चारों ओर फैल गई। लोग उन के काम में दिलचस्पी लेने लगे और उन्हें व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित करने लगे। रोम के शिक्षाधिकारियों ने आप को मंदबुद्धि बालकों की शिक्षा पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया।

इस के बाद मंदबुद्धि और मानसिक निर्बलतावाले मनुष्यों के लिए एक नई संस्था की स्थापना की गई और आप को इस का आचार्य नियुक्त किया गया। इस संस्था में आप ने विक्षिप्तों के अलावा गलियों और मुहल्लों में आवारा फिरनेवाले बालकों को भी दाखिल कर दिया। इस संस्था में आप ने अनेक परीक्षण किये और तत्संबंधी साहित्य का गहराई से अध्ययन किया। इससे भी जब आप को संतोष नहीं हुआ तब आप मंदबुद्धि बालकों की शालाएँ देखने पेरिस और लंदन गईं। इस काम में आप को इतना रस आने लगा कि आप डाक्टरी करना तक भूल गईं और दिन-रात मंदबुद्धि बालकों के बीच रह कर उन का अवलोकन करने लगीं। दिन में जो कुछ देखती या करती थीं रात को उस पर विचार कर के कुछ निष्कर्ष निकालती थीं और तदनुकूल विकास के साधनों का निर्माण करती थीं।

मंदबुद्धि बालकों में काम करते-करते आप को एक दिन सूझा कि जो पद्धति मंदबुद्धि बालकों के लिए इतनी उपयोगी सिद्ध हुई है, वह साधारण बालकों के लिए और अधिक चमत्कारपूर्ण हो सकती है। इसलिए आप प्रचलित शिक्षा-पद्धति की छान-बीन में लग गईं,

जिस के अनुसार साधारण बालकों को शिक्षा दी जाती थी। अपनी इस जिज्ञासा को पूर्णतया तृप्त करने के लिए आप रोम के विश्वविद्यालय में दर्शन-शास्त्र के विद्यार्थी के रूप में दाखिल हो गईं। इस के साथ-साथ आपने प्रायोगिक मनोविज्ञान और मानव-वंश-शास्त्र का अध्ययन भी प्रारंभ कर दिया। अध्ययन समाप्त होने पर आप को रोम के विश्वविद्यालय में मानव-वंश-शास्त्र का अध्यापक नियुक्त किया गया। लेकिन आप तो बालक की सेवा के लिए पैदा हुई थीं, इसलिए इस काम में आप का मन नहीं लगता था। आप तो बाल-शिक्षा के लिए ही अपना जीवन अर्पण करना चाहती थीं। मानव-जाति के उद्धार के लिए आप इसी काम को सर्वश्रेष्ठ मानती थीं।

सौभाग्यवश इस समय इटली में गंदी बस्तियों में बसनेवाले मजदूरों के बालकों की शिक्षा का प्रश्न उपस्थित हुआ। देशभक्त टालमोना ने माता मोण्टीसोरी से इस विषय में बातचीत की और इन गरीब बच्चों की शालाओं का संचालन करने का आप से आग्रह किया। आप तो ऐसे शुभ अवसर की खोज में थीं ही। आपने सहर्ष श्री टालमोना का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और अपनी सरकारी नौकरी को ठुकरा दिया। आप के मित्रों,

संबंधियों और हितैषियों ने आपसे सरकारी नौकरी न छोड़ने का अनुरोध व आग्रह किया। उन्होंने कहा—'आप इतनी योग्य और प्रतिभाशालिनी हैं, आपको तो विश्व-विद्यालय में रह कर ही अपनी उन्नति करनी चाहिए, छोटे बालकों की शालाओं का संचालन करने में आप को क्या मिलेगा ? यह काम तो बहुत हल्का है, समाज में इस का कोई आदर नहीं है। इसलिए सरकारी नौकरी छोड़ने की भूल आप को हरगिज नहीं करनी चाहिए।' लेकिन आप ने किसी की न सुनी। अपने निश्चय पर हिमालय की तरह अडिग रहीं। आप ने दृढ़ता और विश्वास-पूर्वक अपने आलोचकों से कहा—'बच्चों की शिक्षा का काम समाज में कितना ही हेय क्यों न समझा जाता हो, लेकिन मेरी दृष्टि में तो इससे अधिक श्रेष्ठ काम और कोई हो ही नहीं सकता। एक दिन आयेगा जब दुनिया बालक के महत्त्व को समझेगी और मेरे काम की आशा से अधिक कदर करेगी।' आप का यह उत्तर सुन कर किसी को और कुछ कहने का साहस न होता था।

आप के शुभ निश्चय के अनुसार ६ जनवरी १९०७ को मजदूर बस्ती में प्रथम बाल-घर की नींव डाली गई। पहल पहल पचास बालक भर्ती किये गये। ये बालक

बड़े डरपोक, गन्दे और ऊपर से देखने में बड़े बुद्धू लगते थे। वे साथ-साथ नहीं चल सकते थे। चलते-चलते रोते-चिल्लाते और प्रत्येक चीज से डरते थे। वे इतने भयभीत और संकोचशील थे कि किसी से कोई चीज नहीं लेते थे, मिठाई नहीं खाते थे, सवालों का जवाब नहीं देते थे। सारांश यह कि वे सब एक प्रकार से जंगली थे। इन दब्बू बालकों को देख कर सब को आश्चर्य होता था कि इन को कैसे पढ़ाया जायेगा! लेकिन एक साल बाल-घर में रहने के बाद इन बालकों का रंग ढंग ही बदल गया, एक दम कायाकल्प हो गया––मानो किसी ने जादू कर दिया हो, चमत्कार कर दिया हो। बालकों की इतनी प्रगति देख कर अगले साल एक और बाल-घर खोला गया और धीरे-धीरे बालकों की संख्या में वृद्धि होने लगी। देखते-देखते इन बाल-घरों की ख्याति इतनी बढ़ी कि अमरीका, आस्ट्रिया, अफ्रीका, चीन, जापान आदि दूर-दूर के देशों से सब धर्मों, जातियों और वर्गों के लोग इन्हें देखने के लिये आने लगे। जब ये लोग इन बाल-घरों के बालकों की आश्चर्यजनक प्रगति और विकास को देखते थे तो दंग रह जाते थे। बाल-घरों की इतनी प्रगति देख कर बस्ती के मकान मालिकों के अन्दर द्वेषाग्नि भड़क

उठी। वे इन गरीब बालकों की प्रगति को फूटी आँखों नहीं देख सकते थे। वे माता मोण्टीसोरी के काम में रोड़ा अटकाने लगे जिसके फलस्वरूप आपको ये बाल-घर छोड़ने पड़े। लेकिन आपने अपने प्रयोगों को जारी रखा और अपने काम में जरा भी शिथिलता नहीं आने दी।

१९०९ में अपनी शिक्षा-पद्धति के अनुसार शिक्षक तैयार करने के लिए आपने प्रथम प्रशिक्षण केन्द्र इटली में खोला। इस केन्द्र में दूर-दूर से ट्रेनिंग लेने के लिए शिक्षक आए। १९१३ में अन्तर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण केन्द्र का आयोजन किया गया। इसमें अनेक शिक्षकों के अलावा विभिन्न देशों के सौ शिक्षा-शास्त्री भी ट्रेनिंग के लिये आये। इस के बाद तो इन प्रशिक्षण केन्द्रों का ताँता-सा लग गया, जो अब तक जारी है और भविष्य में भी जारी रहेगा।

१९१२ में बालशिक्षा प्रेमियों के आग्रह करने पर आपने 'मोण्टीसोरी-पद्धति' नामक पुस्तक लिखी। इस पुस्तक में मोण्टीसोरी-पद्धति का स्पष्ट रूप से प्रतिपादन किया गया था। यह पुस्तक इतनी प्रसिद्ध हुई कि केवल एक वर्ष में ही इसका दुनिया की विभिन्न पन्द्रह भाषाओं में अनुवाद हो गया। इस पुस्तक के प्रकाशित होने पर

बाल-शिक्षा का काम बड़ी तीव्र गति से आगे बढ़ा। वे शिक्षा-शास्त्री जो केवल उच्च शिक्षा को ही अधिक महत्त्व देते थे, अब बाल-शिक्षा की ओर आकर्षित होने लगे। माता-पिता छोटे बालकों की शिक्षा में रुचि लेने लगे। सारांश यह कि इस पुस्तक ने समस्त शिक्षा-जगत में एक नई चेतना, एक नई प्रेरणा उत्पन्न कर दी। बालक के प्रति लोगों के दृष्टिकोण में परिवर्तन होने लगा। इस पुस्तक के इतनी जल्दी सर्वप्रिय हो जाने से माता मोण्टीसोरी को बड़ा प्रोत्साहन मिला जिसके फलस्वरूप आपने अन्य कई उपयोगी पुस्तकें लिखीं, जो शिक्षा-शास्त्रियों का सदा पथ-प्रदर्शन करती रहेंगी। बाल-शिक्षा प्रेमियों को ये सब पुस्तकें बड़े मनोयोग से पढ़ना चाहिए और इनका हिन्दी में अनुवाद करना चाहिए।

१९१४ में प्रथम महायुद्ध के छिड़ जाने पर आप को अपनी इटली की संस्था बन्द करनी पड़ी। लेकिन आप चुपचाप हाथ पर हाथ धर कर बैठने वाली नहीं थीं। आप इटली छोड़कर अमरीका पहुंचीं और वहाँ एक ट्रेनिंग कालेज की स्थापना की। अमरीका के बाद आप स्पेन गईं और वहाँ भी अपनी पद्धति के अनुसार एक नई संस्था स्थापित की। लेकिन दुर्भाग्य से स्पेन से भी

आप को हट जाना पड़ा, क्योंकि राष्ट्रीयता का जोर बढ़ जाने से आपको स्वतंत्र रूप से काम करने का वहाँ मौका नहीं मिला। समझौता करके आप बड़ी आसानी से वहाँ रह सकती थीं, लेकिन सिद्धान्तों के साथ समझौता करना आपके लिए असह्य था। इसलिए आप स्पेन से लन्दन चली गईं और वहाँ अपनी पद्धति का खूब प्रचार व प्रसार किया, जिसके फलस्वरूप आप को काफी सफलता मिली।

युद्ध समाप्त हो जाने पर १९२२ में इटली की सर-कार ने आपको इटली बुलाया। वहाँ पहुँच कर आपने अपना काम पुनः पूरे जोश से शुरू किया। मुसोलिनी ने आपके काम की बड़ी प्रशंसा की। लेकिन डिक्टेटर बनते ही वह मोण्टीसोरी-पद्धति का कट्टर विरोधी बन गया। उसने आपको फासिज़्म के आधार पर अपनी शालाएँ चलाने के लिए अनेक प्रलोभन दिए। लेकिन आपके लिए ऐसा घातक समझौता करना असंभव था। इसका नतीजा यह हुआ कि आपको अपनी सब शालाएँ बन्द कर देनी पड़ीं। लेकिन आप ऐसी अड़चनों और बाधाओं के सामने झुकनेवाली नहीं थीं। किसी न किसी तरह आपने अपना काम जारी ही रखा।

इटली छोड़ कर आप स्पेन पहुँचीं और इस बार वहाँ अपनी स्वतंत्र संस्था स्थापित की। इसमें सरकार आदि का कोई हाथ नहीं था। आपका ख्याल था कि अब आपको स्वतंत्र रूप से दिल खोल कर काम करने का सुनहरी मौका मिलेगा। लेकिन इस बार भी आपकी इच्छा पूरी नहीं हुई। थोड़े दिन बाद ही स्पेन में गृहयुद्ध छिड़ गया। चारों ओर अन्धकार और अराजकता के बादल छा गए। आपको विवश होकर स्पेन छोड़ना पड़ा। गृहयुद्ध के दिनों में आप के साथ एक घटना घटी, जिसका उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत होता है। गृहयुद्ध के समय आप अकेली कुछ बच्चों के साथ एक मकान में रह रही थीं। एक दिन अचानक मकान के पास गड़गड़ाहट की आवाज सुनाई दी। किसी ने मकान का दरवाजा खटखटाया और खोलने का आदेश दिया। आवाज सुन कर बालक भयभीत हो गए और आपसे चिपट गए। साहस करके आपने दरवाजा खोला तो आपने सार्जेण्ट और कुछ सैनिकों को दरवाजे के बाहर खड़ा देखा। सैनिकों को देख कर आप और बालक घबरा गए, लेकिन आप के आश्चर्य की सीमा न रही जब सार्जेण्ट ने सैनिकों को सम्बोधन करते हुए आदेश दिया, "क्या तुम इन महिला को

जानते हो? ये बालकों की मित्र हैं। देखिए जब तक ये यहाँ रहें, उन्हें किसी प्रकार की आँच न आने पाये।" यह आदेश दे कर सार्जेण्ट चला गया, लेकिन आप के लन्दन चले जाने तक सैनिक आपके मकान की देखभाल करते रहे। इस घटना से स्पष्ट हो जाता है कि सैनिकों के दिल में भी आप का कितना सम्मान था।

स्पेन छोड़ कर आप लन्दन पहुँचीं और अपने काम में जुट गईं। बाल-शिक्षा-आन्दोलन को गति देने के लिए आपने लन्दन में मोण्टीसोरी विश्व केन्द्र स्थापित करने का निश्चय किया। लेकिन दुर्भाग्यवश द्वितीय महायुद्ध का शंखनाद बजने से विश्व केन्द्र की सारी योजना खटाई में पड़ गई। लेकिन अब भी आप विचलित न हुईं। अनेक बाधाओं के बावजूद भी आप को तो बाल-शिक्षा का सन्देश दुनिया के कोने-कोने में पहुँचाना था। इसलिये लन्दन छोड़ कर आप हालैण्ड पहुँचीं। वहाँ आपने अपनी स्थायी संस्था और विश्वकेन्द्र की स्थापना की। हालैण्ड में आपने अपनी पद्धति के अनुसार एक हाई स्कूल का भी संचालन किया।

१९४० में डॉक्टर अरंडेल के आमन्त्रण पर एक प्रशिक्षण केन्द्र चलाने के लिए आप भारत आईं। वहाँ

आप का सबसे पहला कोर्स 'अदियार' में हुआ। इस कोर्स में विभिन्न प्रान्तों और राज्यों के दो सौ से भी अधिक शिक्षक ट्रेनिंग के लिये आये। लेकिन यहाँ भी मुसीबतों ने आपका पीछा नहीं छोड़ा। इटली के मित्र-राष्ट्रों के विरुद्ध युद्ध में शामिल हो जाने पर तत्कालीन अंग्रेज-सरकार ने आप को और आपके भतीजे को नजरबन्द कर दिया। लेकिन कुछ दिन बाद जब सरकार को यह विश्वास हो गया कि आपका इटली की फासिस्ट सरकार से कोई संबंध नहीं है, तो आप पर से प्रतिबन्ध हटा दिया गया। प्रतिबन्ध हटते ही आपने हिन्दुस्तान के विभिन्न भागों में कई प्रशिक्षण केन्द्र चलाये और सैकड़ों शिक्षकों को बाल-शिक्षण में दीक्षा दी। इस संबंध में यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि अन्य देशों की अपेक्षा आप का हिन्दुस्तान में सबसे अधिक स्वागत हुआ। इसका मुख्य कारण यह है कि स्व० गिजुभाई ने यहाँ पहले से ही इस नवीन पद्धति के लिए पृष्ठभूमि तैयार कर दी थी। इसलिए यहाँ आप को इतनी सफलता मिलना स्वाभाविक था। लेकिन यहाँ यह बता देना अनुचित न होगा कि केवल तीन मास के प्रशिक्षण से शिक्षकों को डिप्लोमा तो मिल गया, लेकिन इस पद्धति के रहस्य और

महत्त्व को वे पूर्णतया समझ नहीं सके। इस के अलावा किसी आदर्श बाल-घर के अभाव में स्वतंत्र रूप से बाल-घर के संचालन करने का जो क्रियात्मक अनुभव और ज्ञान मिलना चाहिए था, वह नहीं मिल सका। फलस्वरूप सैकड़ों मोण्टीसोरी ट्रेंड शिक्षकों के होने पर भी आदर्श कहे जानेवाले बाल-घरों की संख्या हमारे यहाँ नहीं के बराबर है। लेकिन इसका यह मतलब हरगिज नहीं है कि इस ट्रेनिंग से शिक्षकों को कुछ भी लाभ नहीं हुआ है।

युद्धोपरान्त माता मोन्टीसोरी १९४९ में इटली लौट गईं। इटली में आपका बड़ा भव्य स्वागत हुआ। वर्षों के निर्वासन के बाद आप को अपने बीच में देख कर इटली निवासियों को अपार हर्ष हुआ। अगस्त १९४९ में एक अन्तर्राष्ट्रीय मोन्टीसोरी परिषद् बुलाई गई। विभिन्न देशों के शिक्षा-शास्त्रियों और बाल-प्रेमियों ने इसमें भाग लिया, जिसके फलस्वरूप बाल-शिक्षा-आन्दोलन को खूब बल व प्रोत्साहन मिला।

इटली के अलावा लंदन, फ्रांस आदि देशों में भी आप का बड़ा स्वागत हुआ। जर्मनी के बर्लिन विश्वविद्यालय ने भी आप को "पूर्ण स्वतंत्र वातावरण में बालक का

लालन-पालन" विषय पर व्याख्यान देने के लिए अपने यहाँ बुलाया। और भी कई स्थानों से आप को निमंत्रण मिले। इससे स्पष्ट हो जाता है कि इतने वर्षों के निर्वासन के बाद भी यूरोप ने आप को भुलाया नहीं।

इटली की सरकार ने आपसे साग्रह निवेदन किया कि आप इटली में ही रह कर अपनी इच्छानुसार शिक्षा की व्यवस्था करें, जिसके लिए सरकार आप को सब प्रकार की सुविधाएँ और आर्थिक सहायता देगी। लेकिन आपने इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया क्योंकि आपकी अंतिम इच्छा पूर्व में काम करने की थी। इसलिए एक वर्ष यूरोप में अपने काम का पुनः संगठन करने के पश्चात् आपने पूर्व को अपनी प्रवृत्तियों का केन्द्र बनाया, क्योंकि आप अपने काम को केवल यूरोप तक ही सीमित न रख कर समस्त विश्व में फैलाना चाहती थीं। लेकिन ६ मई १९५२ की रात को मस्तिष्क की किसी धमनी के अकस्मात् फट जाने पर हालैण्ड में आपका देहान्त हो गया। आपके निधन से शिक्षा-जगत को जो क्षति पहुँची है उसका निकट भविष्य में पूरा होना असंभव है।

सचमुच माता मोण्टीसोरी समस्त विश्व के बालकों की माँ व संरक्षिका थीं। आप बालक के समुचित

विकास में ही समस्त विश्व की सेवा मानती थीं। आपका दृढ़ विश्वास था कि स्वतंत्र वातावरण में सुलालित-पालित, सुशिक्षित व सुविकसित बालक ही विश्व की राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, साँस्कृतिक आदि समस्त जटिल समस्याओं को आसानी से हल कर सकता है। इसीलिये आप जीवन भर जी-जान से बाल-सेवा में जुटी रहीं। बाल-सेवा के अपने पवित्र मिशन को सफल बनाने के लिये आपने सब प्रकार के अन्याय व अत्याचार का वीरतापूर्वक मुकाबला किया। स्वतंत्र बाल-शिक्षा के प्रचार व प्रसार में आप को जिन कठिनाइयों, आपत्तियों और विषम परिस्थितियों में से गुजरना पड़ा, उन की कल्पना मात्र से रोंगटे खड़े हो जाते हैं। लेकिन इन सब विषमताओं और बाधाओं के बावजूद आप अपने पथ से कभी विचलित नहीं हुईं और अन्तिम समय तक बालक की महान्ता का संदेश जगत को सुनाती रहीं—अपनी वाणी और लेखनी द्वारा।

निस्संदेह बाल-जगत्, बाल-शिक्षा तथा बाल-विकास के क्षेत्र में पृथ्वी पर जब तक बालक रहेगा, तब तक आप की तपस्या, आप की साधना, आप की एकनिष्ठा, आप की मौलिक और महान् देन भावी युग को बाल-सेवा के लिये सदा प्रेरणा प्रदान करती रहेगी।

माता मोण्टीसोरी अपना काम कर गईं और स्वतंत्र बाल-शिक्षा का सही मार्ग दुनिया को बता गईं। अब माता मोण्टीसोरी के महान् मिशन में विश्वास व श्रद्धा रखनेवाले समस्त बाल हितैषियों व मानवता प्रेमियों का यह परम कर्तव्य है कि स्वतंत्र बाल-शिक्षा के दीप को वे निरंतर जलाये रखें और नया तेल उस में डालते रहें—तमसो मा ज्योतिर्गमय !

मोण्टीसोरी-पद्धति

[एक दृष्टि में

२

* *

मोण्टीसोरी पद्धति का आधार

१. बालक जन्म से बिल्कुल अपूर्ण होने पर भी पूण बनने की अद्भुत शक्ति अपने साथ लाता है। वैज्ञानिक वातावरण मिलने पर वह दिन-प्रति-दिन पूर्णता की ओर बढ़ता है।

२. बालक क्रियाशील प्राणी है। क्रिया के बिना वह जीवित नहीं रह सकता। बालक विकास के लिए क्रिया करता है। उस की प्रत्येक क्रिया उसे विकास की ओर ले जाती है। क्रिया करते हुए बालक कभी थकता ही नहीं।

३. बालक जो कुछ सीखता है, स्वयं अन्त:प्रेरणा से सीखता है। उसे कोई पढ़ा नहीं सकता, सिखा नहीं

सकता, ऊपर से उस पर कोई चीज़ लादी नहीं जा सकती ।

४. प्रत्येक बालक एक-दूसरे से भिन्न होता है। प्रत्येक बालक स्वतंत्र व्यक्ति है। वह स्वतंत्र रूप से अपना विकास करता है।

मोण्टीसोरी पद्धति क्या है ?

१. मोण्टीसोरी-पद्धति एक जीवन-दर्शन है; एक विचार-धारा है; एक नई जीवन-दृष्टि है; एक जीवनव्यापी तत्त्व है।

२. मोण्टीसोरी-पद्धति बालक के व्यक्तित्व का सम्मान करती है। उसे शिक्षा का केन्द्र मानती है।

३. मोण्टीसोरी पद्धति शिक्षा-दीक्षा और चरित्र-निर्माण के लिए जन्म से छः साल तक के समय को अत्यंत महत्त्वपूर्ण समझती है।

४. मोण्टीसोरी-पद्धति प्राकृतिक व स्वाभाविक रूप में बौद्धिक, शारीरिक व व्यावहारिक शिक्षा का एकीकरण करक बालक का सर्वतोमुखी विकास करती है।

५. मोण्टीसोरी-पद्धति बालक के सर्वतोमुखी विकास क लिए वैज्ञानिक व स्वाभाविक वातावरण स्थापित करती है।

६. मोण्टीसोरी-पद्धति इंद्रिय-विकास के लिए वैज्ञानिक साधनों का निर्माण करती है।

७. मोण्टीसोरी-पद्धति बालक की रुचि-अरुचि को ध्यान में रख कर व्यक्तिगत शिक्षा का आयोजन करती है।

८. मोण्टीसोरी-पद्धति स्वातंत्र्य, स्वयंस्फूर्ति और स्वयंशिक्षण को शिक्षा में प्रथम स्थान देती है।

९. मोण्टीसोरी-पद्धति बालक को अपनी प्रवृत्ति स्वयं चुनने और अपना निर्णय अपने आप करने की पूर्ण स्वतंत्रता देती है।

१०. मोण्टीसोरी-पद्धति बालक की इच्छा जान कर ही उसे आवश्यक सहायता और सुझाव देती है।

११. मोण्टीसोरी-पद्धति स्वाभाविक रूप में बालक को स्वावलम्बन की ओर ले जाती है।

१२. मोण्टीसोरी-पद्धति समय-पत्रक और पाठ्यक्रम के बन्धन से बालक को मुक्त करती है।

१३. मोण्टीसोरी-पद्धति सज़ा-भय, इनाम-लालच, हार-जीत, परीक्षा, प्रतिस्पर्धा और किसी को खुश करने के लिए बालक के प्रदर्शन का सर्वथा बहिष्कार करती है।

१४. मोण्टीसोरी-पद्धति सब प्रकार के घातक भेद-भाव को मिटाकर सच्ची मानवता का बीजारोपण करती है।

१५. मोण्टीसोरी-पद्धति एक वर्गहीन और शोषणहीन समाज की नींव डालती है।

१६. मोण्टीसोरी-पद्धति निस्संदेह अहिंसक क्रान्ति की एक साधना है।

मोण्टीसोरी-पद्धति क्या नहीं है ?

१. मोण्टीसोरी-पद्धति खेल-खिलौनों द्वारा शिक्षा देने की पद्धति नहीं है।

२. मोण्टीसोरी-पद्धति शीघ्र चमत्कार दिखानेवाली पद्धति नहीं है।

३. मोण्टीसोरी-पद्धति झट-पट पढ़ना-लिखना सिखा देने की पद्धति नहीं है।

४. मोण्टोसोरी-पद्धति केवल साधन-सामग्री जुटा देने की पद्धति नहीं है।

५. मोण्टीसोरी-पद्धति बालक को स्वच्छंद बना देने या उसे मनमानी करने देने की पद्धति नहीं है।

६. मोण्टीसोरी-पद्धति परीक्षा पास करा देने की पद्धति नहीं है।

७. मोण्टीसोरी-पद्धति किंडरगार्टन पद्धति नहीं है।

८. मोण्टीसोरी-पद्धति किसी व्यक्ति विशेष की बपौती नहीं है।

९. मोण्टीसोरी-पद्धति आँख मीच कर किसी के पीछे चलना सिखानेवाली पद्धति नहीं है।

मोण्टीसोरी-पद्धति के साधन

१. मोण्टीसोरी-पद्धति के साधन वर्षों के अनुभव के आधार पर बड़े वैज्ञानिक ढंग से बनाये गये हैं। बालकों ने ही इन साधनों का निर्माण किया है। इन साधनों के पीछे विकास की एक गहरी फिलॉसफी है। जो इस फिलॉसफी को नहीं समझता, वह इन साधनों के महत्त्व को महसूस नहीं कर सकता।

२. मोण्टीसोरी-पद्धति के साधन बालक की मानसिक भूख को तृप्त करते हैं। वे उसके मन, बुद्धि और इच्छा-शक्ति का निर्माण करने में बड़े सहायक होते हैं।

३. मोण्टीसोरी-पद्धति के साधन बालक में समस्त बौद्धिक विषयों के शिक्षण का व्यवस्थित बीजारोपण करते हैं। भाषा और गणित सिखाने में तो और कोई साधन इनका मुकाबला नहीं कर सकते। इन साधनों के द्वारा बालक हँसते-खेलते बड़ी सुगमता से इन विषयों का ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं।

४. मोण्टीसोरी-पद्धति के साधन बालक को अपने स्नायुओं पर काबू रखने का अभ्यास कराते हैं। इन साधनों पर काम करते-करते बालक लिखने के लिए तैयार हो

जाता है। यही कारण है कि मोण्टीसोरी शाला का बालक पढ़ने से पहले लिखना सीख जाता है।

५. मोण्टीसोरी-पद्धति के साधन प्रत्येक इंद्रिय के विकास के लिए अलग-अलग बनाये गये हैं; क्योंकि छः साल तक बालक की इन्द्रियाँ अलग-अलग काम करती हैं। इन साधनों के द्वारा बालक की इन्द्रियों का विकास बड़ी तेज़ी से, व्यवस्थित रूप में और कम-से-कम समय में होता है।

६. मोण्टीसोरी-पद्धति के साधन स्वयंनिर्देशक और भूलों के स्वयंशोधक होते हैं, इसलिए बालक को इन से बार-बार काम करने की प्रेरणा मिलती है। भूल होने पर वह अपनी भूल को स्वयं सुधार लेता है। उसे दौड़ कर शिक्षक के पास जाने की जरूरत नहीं पड़ती। काम करते-करते बालक इतना तल्लीन हो जाता है कि खाना-पीना तक भूल जाता है।

७. मोण्टीसोरी-पद्धति के साधन बालक को स्वावलंबन, स्वयंशिक्षण और स्वयंविकास की ओर अग्रसर करते हैं।

८. मोण्टीसोरी-पद्धति के साधन भिन्न-भिन्न होते हुए भी एक-दूसरे के साथ संबंधित होते हैं। गट्टापेटी पर काम

करते-करते बालक को केवल परिमाण का ही ज्ञान प्राप्त नहीं होता, बल्कि दशक पद्धति की छाप भी उसके अज्ञात मन पर पड़ती है।

९. मोण्टीसोरी-पद्धति के साधन बालक में विद्यमान क्रमिकता, क्रियाशीलता और व्यवस्था का पोषण करते हैं।

१०. मोण्टीसोरी-पद्धति के साधन सादे होने पर भी इतने सुन्दर होते हैं कि वे बालक को अपनी ओर खींचते हैं, उसे क्रिया करने के लिए उत्साहित करते हैं।

११. मोण्टीसोरी-पद्धति के साधन इस ढंग के होते हैं कि बालक बड़ी आसानी से उन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान तक ला और ले जा सकता है।

१२. मोण्टीसोरी-पद्धति के साधन बालक में ऐसी शान्ति और एकाग्रता पैदा करते हैं कि जिसे देख कर दंग रह जाना पड़ता है। सचमुच बालक की एकाग्रता देखते ही बनती है। एकाग्रता में वह योगी को भी मात करता देखा गया है।

१३. मोण्टीसोरी-पद्धति के साधन बालक में धैर्य और आनन्द का संचार करते हैं। किसी काम के पूरा हो जाने पर बालक को कितनी खुशी होती है, इस का अनुमान लगाना बड़ा कठिन है।

१४. मोण्टीसोरी-पद्धति के साधन बालक को अमूर्त्त से मूर्त्त की ओर ले जाते हैं।

१५. मोण्टीसोरी-पद्धति के साधन निस्संदेह इन्द्रिय-विकास के सर्वोत्तम साधन हैं।

मोण्टीसोरी-पद्धति और किंडरगार्टन-पद्धति में समानता

१. दोनों पद्धतियाँ जन्म से छः साल तक के समय को शिशु की शिक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण मानती हैं।

२. दोनों पद्धतियों में खेल और संगीत के लिए महत्त्वपूर्ण स्थान है।

३. दोनों पद्धतियों में मार-पीट और धाक-धमक सर्वथा वर्जित है।

४. दोनों पद्धतियाँ बालकों को आनन्दपूर्वक काम करने देने में विश्वास रखती हैं।

५. दोनों पद्धतियों में प्राणि-रक्षण की आयोजना है।

६. दोनों पद्धतियाँ बालक का सम्मान करना सिखाती हैं।

मोण्टीसोरी-पद्धति और किंडरगार्टन-पद्धति में असमानता

१. मोण्टीसोरी-पद्धति बालक को स्वतंत्र व्यक्ति मानती है। किंडरगार्टन-पद्धति ऐसा नहीं मानती। मोण्टीसोरी-पद्धति का दावा है कि बालक जल्दी से जल्दी स्वतंत्र होना चाहता है; वह अपना सब काम अपने आप करने के लिए

छटपटाता है। लेकिन किंडरगार्टन-पद्धति ऐसा दावा नहीं करती। उसकी मान्यता यह है कि छः साल तक बालक परावलम्बी होता है।

२. मोण्टीसोरी-पद्धति में बालक स्वयं अपनी अन्तःप्रेरणा से ज्ञान प्राप्त करता है। किंडरगार्टन-पद्धति में शिक्षक बालक को ज्ञान देता है।

३. मोण्टीसोरी-पद्धति में बालक अपनी रुचि के अनुसार अपनी क्रिया या प्रवृत्ति अपने आप चुनता है, और जितनी देर तक चाहे, वह उसे करने के लिए बिल्कुल स्वतंत्र होता है। किंडरगार्टन में बालक जो क्रिया करता है, वह शिक्षक की प्रेरणा से करता है। इस प्रकार मोण्टीसोरी-पद्धति में बालक की क्रिया या प्रवृत्ति स्वयंप्रेरित होती है, जबकि किंडरगार्टन में बालक की क्रिया या प्रवृत्ति परप्रेरित होती है।

४. मोण्टीसोरी-पद्धति में बालक सर्वोपरि है। उसमें बालक को शिक्षा का केन्द्र मान कर सारी व्यवस्था की जाती है; शिक्षक गौण है। किंडरगार्टन पद्धति में शिक्षक सब कुछ है। वह अपनी इच्छानुसार सारी शिक्षा की व्यवस्था करता है। दूसरे शब्दों में शिक्षक मुख्य है और बालक गौण है।

५. मोण्टीसोरी-पद्धति कृत्रिम रूप से रुचि पैदा करने का प्रयास नहीं करती। जब तक बालक में अन्दर से रुचि पैदा नहीं हो जाती, तब तक वह प्रतीक्षा करती है। किंडरगार्टन कृत्रिम उपायों से रुचि पैदा करने का प्रयत्न करती है। किसी काम में बालक की रुचि हो या न हो, उसे समूह के साथ विवश होकर काम करना ही पड़ता है।

६. मोण्टीसोरी-पद्धति में सामाजिक, नैतिक आदि गुण बालक वातावरण से अपने आप सीखता है। किंडर-गार्टन पद्धति म शिक्षक इन सब बातों को सिखाता है।

७. मोण्टीसोरी-पद्धति व्यक्तिगत शिक्षा को सर्वप्रथम स्थान देती है। किंडरगार्टन-पद्धति समूह-शिक्षा को सब से अधिक महत्त्व देती है।

८. मोण्टीसोरी-पद्धति में विकास मुख्य है। किंडरगार्टन-पद्धति में ज्ञान मुख्य है।

९. मोण्टीसोरी-पद्धति में सारे बौद्धिक विषयों की रूप-रेखा बड़े आकर्षक और वैज्ञानिक ढंग से बालक के सामने उपस्थित की जाती है। किंडरगार्टन-पद्धति में बालक के सामने खास-खास विषय ही रक्खे जाते हैं।

१०. मोण्टीसोरी-पद्धति के साधन बड़ी खोज के बाद बनाये गये हैं। उनसे बालक अपनी भूल को स्वयं बिना किसी की सहायता के सुधार लेता है। लेकिन किंडर-गार्टन के खिलौने इस ढंग के नहीं होते।

११. मोण्टीसोरी-पद्धति का मुख्य सिद्धांत यह है कि बालक को कोई सिखा नहीं सकता। किंडरगार्टन पद्धति ऐसा नहीं मानती, उसके अनुसार बालक को पढ़ाया और सिखाया जा सकता है।

१२. संक्षेप में मोण्टीसोरी-पद्धति और किंडरगार्टन-पद्धति में दिन-रात का अन्तर है; सैद्धान्तिक मतभेद है।

मोण्टीसोरी-पद्धति और बालक

१. मोण्टीसोरी-पद्धति बालक में नव जीवन का संचार करती है। वह उस को अधिकाधिक विकास करने का अवसर देती है।

२. मोण्टीसोरी-पद्धति बालक को स्वावलम्बी, स्वाश्रयी और निर्भय बनाती है।

३. मोण्टीसोरी-पद्धति बालक को अपनी समस्या अपने आप हल करने के काबिल बनाती है।

४. मोण्टीसोरी-पद्धति बालक को स्वतन्त्र रूप से सोचने, काम करने और स्वतन्त्र निर्णय करने की शक्ति देती है।

५. मोण्टीसोरी-पद्धति मंदबुद्धि और तीव्रबुद्धि बालकों को अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार विकसित होने का मौका देती है।

६. मोण्टीसोरी-पद्धति बालक को सब के साथ हिल मिल कर रहना सिखाती है।

७. मोण्टीसोरी-पद्धति बालक को एकाग्र, शान्त और व्यवस्थित बनाती है।

८. मोण्टीसोरी-पद्धति बालक की इच्छा-शक्ति का विकास कर के उस का चरित्र-निर्माण करती है।

९. मोण्टीसोरी-पद्धति बालक में कर्त्तव्य, जिम्मेदारी और सहयोग की भावना उत्पन्न करती है।

१०. संक्षेप में, मोण्टीसोरी-पद्धति बालक को आत्मशिक्षण, आत्मनियंत्रण, आत्मसंयम, आत्मसृजन, आत्म-विश्वास और आत्मविकास की ओर अग्रसर करती है।

मोण्टीसोरी-पद्धति और माता-पिता

१. मोण्टीसोरी-पद्धति माता-पिता में बालक के प्रति नई दृष्टि पैदा करती है; अर्थात् उन्हें बालक की दृष्टि से देखना और तदनुसार व्यवहार करना सिखाती है।

२. मोण्टीसोरी-पद्धति माता-पिता को बालक का सम्मान करने और उसका महत्त्व समझने की प्रेरणा देती है, प्रोत्साहित करती है।

३. मोण्टीसोरी-पद्धति माता-पिता को इस बात के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करती है कि वे बालक को अपना कार्य अपने आप करने की सुविधा दें।

४. मोण्टीसोरी-पद्धति माता-पिता को नये ढंग से बालक का लालन-पालन करने के लिए उत्साहित करती है।

५. मोण्टीसोरी-पद्धति माता-पिता को यह सन्देश देती है कि वे अपने बालक को बाल-मंदिर में भेजें और उसके लिए उपयुक्त साहित्य तथा साधन जुटावें।

६. मोण्टीसोरी-पद्धति माता-पिता में बालक के साथ खेलने, और उसकी कठिनाइयों को समझ कर उन्हें दूर करने की भावना जाग्रत करती है।

७. मोण्टीसोरी-पद्धति माता-पिता को शिक्षक-संरक्षक-सम्मेलन में भाग लेने और बालक के विकास में दिलचस्पी लेने के लिए तैयार करती है।

८. मोण्टीसोरी-पद्धति माता-पिता को बालक के सामने लड़ने-झगड़ने से रोकती है।

९. मोण्टीसोरी-पद्धति माता-पिता को लड़के और लड़की में भेद न करने की शिक्षा देती है।

१०. मोण्टीसोरी-पद्धति माता-पिता को बालक के साथ बालक बन कर रहने का पाठ पढ़ाती है।

मोण्टीसोरी-पद्धति और शिक्षक

१. मोण्टीसोरी-पद्धति शिक्षक को बालक के व्यक्तित्व में अटूट श्रद्धा रखना सिखाती है।

२. मोण्टीसोरी-पद्धति शिक्षक को अपनी मनोवृत्ति बदलने के लिए बाध्य करती है।

३. मोण्टीसोरी-पद्धति शिक्षक को बालक की प्रत्येक हलचल और गतिविधि का सूक्ष्म रूप से अवलोकन करने की तालीम देती है।

४. मोण्टीसोरी-पद्धति शिक्षक को बालक का सेवक बन कर रहने की ट्रेनिंग देती है।

५. मोण्टीसोरी-पद्धति शिक्षक को बालक में घुल-मिल जाने की स्फूर्ति देती है।

६. मोण्टीसोरी-पद्धति शिक्षक को जीव-विज्ञान और मनो-विज्ञान का गहरा अध्ययन करने के लिए प्रेरित करती है।

७. मोण्टीसोरी-पद्धति शिक्षक को सदा सजग और सतर्क रखती है।

८. मोण्टीसोरी-पद्धति शिक्षक को सच्चा साधक बनाती है।

९. मोण्टीसोरी-पद्धति शिक्षक में अटूट धैर्य और दृढ़ता का विकास करती है।

१०. मोण्टीसोरी-पद्धति शिक्षक के लिए महान् क्रान्ति का द्वार खोलती है।

मोण्टीसोरी-पद्धति में विकृति

१. माण्टोसोरी-पद्धति बाल-शिक्षा की सर्वोत्तम और अद्वितीय पद्धति होने पर भी अनेक विकृतियों का शिकार हो गई है और होती जा रही है।

२. मोण्टीसोरी शाला मोण्टीसोरी-पद्धति के सिद्धान्तों की परवाह न करते हुए केवल दिखावे की शाला बनती जा रही है।

३. मोण्टीसोरी शाला मोण्टीसोरी-पद्धति के प्राण व्यक्तिगत शिक्षण को छोड़ कर समूह शिक्षण को अपनाती जा रही है।

४. मोण्टीसोरी शाला इन्द्रिय विकास के साधनों को ही मोण्टीसोरी-पद्धति समझने लगी है। इन साधनों के

पीछे जो गूढ़ रहस्य छिपा हुआ है, उसकी ओर ज़रा भी ध्यान नहीं देती। फलतः शाला में बालक का जैसा विकास होना चाहिए, वैसा विकास नहीं हो पाता।

५. मोण्टीसोरी शाला में धीरे-धीरे समय-पत्रक और पाठ्यक्रम घुसता जा रहा है।

६. मोण्टीसोरी शाला में प्रलोभन, प्रदर्शन, सज़ा और भय को भी स्थान मिलने लगा है।

७. मोण्टीसोरी शाला में अन्य शालाओं की तरह अक्षर-ज्ञान दिनों-दिन जोर पकड़ता जा रहा है।

८. मोण्टीसोरी शाला बालक के विकास को मुख्य न मानकर शीघ्र परिणाम दिखाने के चक्कर में पड़ती जा रही है।

९. मोण्टीसोरी शाला लकीर की फ़कीर बनती जा रही है। जो कुछ डॉक्टर मोण्टीसोरी ने कह दिया है, उससे वह एकदम भी आगे जाना नहीं चाहती है। परिवर्तन के नाम से वह दूर भागती है।

१०. मोण्टीसोरी शाला के शिक्षक में उस उत्साह, धुन, लगन और मिशनरी भावना का प्रायः अभाव-सा पाया जाता

है, जो इस पद्धति की सफलता के लिये अनिवार्य है। मोण्टीसोरी शिक्षक मोण्टीसोरी-पद्धति के मर्म और महत्व को समझते तथा बालक की अधिकाधिक सेवा करने के लिये नहीं, बल्कि अपनी प्रतिष्ठा और मूल्य बढ़ाने के लिये मोण्टीसोरी ट्रेनिंग हासिल करता है। इसलिये हमारे जानते सारे देश में आज एक भी ऐसी नमूने की शाला नहीं है, जिसे वास्तविक रूप में मोण्टी-सोरी शाला कहा जा सके।

विकृति दूर कैसे हो ?

१. मोण्टीसोरी-पद्धति को रोगमुक्त करने के लिये अधिका-धिक मोण्टोसोरी ट्रेनिंग-केन्द्र खोलने की जरूरत है। इन केन्द्रों में ट्रेनिंग का माध्यम हिन्दी होना चाहिये।

२. ट्रेनिंग में ऐसे शिक्षक लिये जाने चाहिएँ, जो योग्य हों, कर्मठ हों और इस पद्धति के तथा बालक के प्रति अगाध श्रद्धा रखते हों।

ट्रेनिंग का समय कम से कम दो वर्ष होना चाहिए। ट्रेनिंग-केन्द्र के साथ एक आदर्श बालघर का होना अनिवार्य है। दो-तीन महीने की ट्रेनिंग एक दम बन्द होनी चाहिए। इस से लाभ के बजाय हानि अधिक होती है। ऐसी ट्रेनिंग पाये हुए शिक्षक बिल्कुल अधकचरे साबित होते हैं।

३. मोण्टीसोरी शाला में बच्चों की संख्या सीमित होनी चाहिए। शुरू-शुरू में तो एक शिक्षक के पास दस से अधिक बच्चे नहीं होने चाहिएँ। धीरे-धीरे व्यवस्था जमने पर यह संख्या बढ़ाई जा सकती है। शिक्षक की सहायता के लिए एक सहायक शिक्षक या साथी ज़रूर होना चाहिए।

४. मोण्टीसोरी-पद्धति के साधन उचित मूल्य में मिल सकें, ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए। इन साधनों के लिए आज जो मूल्य देना पड़ता है, वह बहुत बढ़ा-चढ़ा है। साधारण स्थितिवाली शाला तो उन्हें खरीद ही नहीं सकती। नये साधन बनाने का प्रयत्न भी होना चाहिए।

५. मोण्टीसोरी-पद्धति के मौलिक सिद्धान्तों की रक्षा करते हुए अपनी आवश्यकता, प्रयोग और अनुभव के आधार पर इस पद्धति में समय-समय पर परिवर्तन होते रहना चाहिए।

६. मोण्टीसोरी-पद्धति को सफल बनाने के लिए माता-पिता का सहयोग अत्यन्त आवश्यक है। इसके बिना बालक का पूर्ण विकास कठिन ही नहीं, असम्भव है।

७. मोण्टोसोरी शालाओं और मोण्टीसोरी शिक्षकों का एक देशव्यापी संगठन होना चाहिए, जो समय-समय पर ठीक पथ-प्रदर्शन कर सके। वर्ष में कम से कम एक साल के लिए योजना तैयार करनी चाहिए। इस के अलावा मोण्टीसोरी शिक्षकों और शालाओं की एक सूची भी तैयार की जानी चाहिए।

८. मोण्टीसोरी साहित्य पर्याप्त मात्रा में प्रकाशित होना चाहिए। बालक और पालक के उपयुक्त कुछ सुन्दर मासिकपत्र निकलने चाहिएँ।

९. मोण्टीसोरी शालाओं के निरीक्षण का उचित प्रबन्ध होना चाहिए। मोण्टीसोरी की आड़ में चलनेवाली पुरानी ढर्रे की शालाओं को बन्द कर देना चाहिए।

१०. असली और नकली मोण्टीसोरी शालाओं का फर्क माता-पिता को समझाते रहना चाहिए।

११. मोण्टीसोरी शाला के शिक्षक को आवश्यक सुविधायें अवश्य मिलनी चाहिएँ, ताकि वह इधर-उधर भटकता न रहे, हैरानी व परेशानी से बच सके।

१२. मोण्टीसोरी-पद्धति को सरकार से मान्य करवाना चाहिए, इसके लिए ज़बरदस्त आन्दोलन होना चाहिए।

१३. मोण्टीसोरी शिक्षकों के पथ-प्रदर्शन के लिए कम से कम एक आदर्श बालघर और एक आदर्श ट्रेनिंग सेण्टर तो होना ही चाहिए। इसके बिना मोण्टीसोरी-पद्धति का सफलतापूर्वक चलना कठिन ही नहीं, असम्भव है ।

१४. मोण्टीसोरी-पद्धति का महत्व बताने के लिए कम से कम एक ऐसी मोण्टीसोरी शाला ज़रूर होनी चाहिए, जिस में मोण्टीसोरी-पद्धति के ही अनुसार मैट्रिक तक की शिक्षा दी जा सके। आज तो एक भी ऐसी शाला हमारे देश में नहीं है।

३

* *

कुछ मिथ्या धारणाएँ

मोण्टीसोरी-पद्धति के सम्बन्ध में कितनी ही मिथ्या धारणाएँ और गलतफहमियाँ शिक्षा-जगत् में फैली हुई हैं। केवल साधारण आदमी ही नहीं, बल्कि बड़े-बड़े विद्वान, शिक्षा-शास्त्री और मानस-शास्त्री भी इन मिथ्या धारणाओं और गलतफहमियों का शिकार बने हुए हैं। मैं जब इस पद्धति के बारे में उनकी आलोचनाओं को सुनता-पढ़ता हूँ, तो मुझे बड़ा आश्चर्य और दुख होता है। मैं सोचने लगता हूँ कि बिना जाँच-पड़ताल के ये आलोचक कैसे इस पद्धति के बारे में अपनी राय कायम कर लेते हैं, और लोगों को गुमराह करते रहते हैं। जो इस पद्धति के अनुसार बालशाला चलाते हैं, वे जानते हैं

कि यह पद्धति बाल-विकास के लिए कितनी वैज्ञानिक, प्राकृतिक और बेजोड़ है। मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हूँ कि अन्य कोई भी बाल-शिक्षा-पद्धति इस पद्धति का मुकाबला नहीं कर सकती। लेकिन जब तक इस पद्धति के सम्बन्ध में फैले हुए भ्रमों और अज्ञान को दूर नहीं किया जायेगा, तब तक हम इस पद्धति से पूरा-पूरा लाभ हरगिज़ नहीं उठा सकेंगे। इसलिए इस पद्धति के बारे में प्रचलित मिथ्या धारणाओं, गलतफहमियों पर ठण्डे दिल से विचार कर लेना बड़ा ज़रूरी है।

[१]

मोण्टीसोरी-पद्धति के बारे में प्रायः लोगों की यह धारणा है कि यह पद्धति बड़ी खर्चीली है, बड़ी महँगी है। इस के साधन खरीदने और वातावरण बनाने में बहुत रुपया खर्च होता है। ज़रा गहराई से सोचने पर ज्ञात होगा कि उन के इस कथन में कोई सार नहीं है। सब से पहले मैं साधनों को लेता हूँ। इस पद्धति के साधन आजकल हजार-बारह सौ रुपये में आते हैं। सब बाल-शालाएँ मिल कर अपने साधन अपने-आप बनाने की व्यवस्था कर लें, तो ये साधन आधे मूल्य में तैयार हो सकते हैं। अगर सरकार इस काम को अपने हाथ ले ले, तो कहना

ही क्या ? फिर तो सरकार और जनता दोनों को ही बहुत लाभ हो सकता है। दूसरी बात इन साधनों के बारे में यह है कि एक बार खरीदने के बाद ये १०-१५ वर्ष तक चलते हैं। अगर सावधानी से रखे जायँ, तो ये साधन और भी अधिक समय तक काम दे सकते हैं। हमारे बालघर में गत १० वर्ष से वही पुराने साधन चल रहे हैं और अभी कई वर्ष तक और चलते रहेंगे। इस प्रकार इन साधनों पर जो कुछ खर्च किया जाता है, वह कुछ भी नहीं है। लेकिन इन साधनों से बालकों को जो लाभ होता है, उस का अनुमान लगाना कठिन है। बालकों की इन्द्रियों का विकास करने में ये साधन सचमुच अद्वितीय हैं। इन साधनों के द्वारा गणित-जैसा रूखा समझा जाने-वाला विषय भी बालक खेल-खेल में बिना थके सीख जाते हैं। ऐसी हालत में साधनों पर होनेवाले खर्च की शिका-यत करना कोई अर्थ नहीं रखता। बात दरअसल यह है कि हम बाल-शिक्षा के महत्त्व को नहीं समझते। इस-लिए जब बाल-शिक्षा का सवाल हमारे सामने आता है, तो खर्च का बहाना बना कर हम इसे टाल देते हैं; खटाई में डाल देते हैं। वर्तमान प्राण-घातक उच्च शिक्षा पर हम पानी की तरह रुपया बहा सकते हैं, कालेज में पढ़ने-

वाले एक विद्यार्थी पर १००-१५० रु० मासिक बिना चूं-चरा के खर्च कर सकते हैं। लेकिन जब बाल-शिक्षा का सवाल हमारे सामने रखा जाता है, तो हम धनाभाव का राग अलापने लगते हैं। क्या इस से स्पष्ट नहीं हो जाता कि हम बालकों की उपेक्षा करते हैं, उन की शिक्षा को हम ज़रूरी नहीं समझते ? हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि बालक भावी नेता हैं, राष्ट्र के प्राण हैं। उन की अवहेलना कर के हम ज़िन्दा नहीं रह सकते। इसलिए दिल खोल कर बाल-शिक्षा पर हमें पैसा खर्च करना चाहिए, और बाल-विकास के लिए जो पद्धति सर्वोत्तम है, उसे अपनाना चाहिए।

अगर किसी कारण हम साधनों को नहीं खरीद सकते, तो हमें इसकी चिंता नहीं करना चाहिए। मोण्टीसोरी-पद्धति साधनों में नहीं सिद्धान्तों में है। साधन तो गौण हैं। उन के बिना शाला का काम धीमा तो हो सकता है, लेकिन अटक नहीं सकता। जो शिक्षक मोण्टीसोरी-पद्धति के मूलभूत सिद्धान्तों—स्वतन्त्रता, स्वयंस्फूर्ति, स्वयं-विकास—को भली प्रकार समझता है, वह साधनों के बिना भी काम चला सकता है। स्थानीय परिस्थिति व सुविधा के अनुसार वह आवश्यक साधन अपने आप तैयार

कर सकता है। मोण्टीसोरी-पद्धति में साधनों की अपेक्षा वातावरण का महत्त्व अधिक है। योग्य शिक्षक आसपास में पाई जानेवाली चीजों में अधिक पैसे खर्च किये बिना ही वातावरण को सुन्दर बना सकता है। मतलब यह कि अगर शिक्षक के पास वैज्ञानिक दृष्टि है, बालक के प्रति अगाध श्रद्धा है, तो वह पूरे साधन न होने पर भी इस पद्धति का सफलतापूर्वक प्रयोग कर सकता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि खर्च का सवाल इस पद्धति में बाधक नहीं होता। मैं कितनी ही ऐसी शालाओं को जानता हूँ, जो बहुत थोड़े खर्च में अपना काम चलाती हैं। इसलिए इस पद्धति को खर्चीली बता कर बदनाम करना सर्वथा अनुचित है। लेकिन इस का यह मतलब हरगिज़ नहीं है कि बिना थोड़ा-बहुत पैसा खर्च किये ही हम बाल-शिक्षा का काम कर सकते हैं। और कुछ नहीं तो योग्य शिक्षक पर तो पैसा खर्च करना ही होगा। अगर अपने बालकों के लिए हम इतना भी नहीं कर सकते, तो फिर बाल-शिक्षा की बात ही छोड़ देनी चाहिए।

[२]

इस पद्धति के खिलाफ दूसरी शिकायत यह है कि यह पद्धति विदेशी है, इसलिए हमारे देश के लिए उपयुक्त

नहीं हो सकती। ऐसा तर्क करनेवाले दया के पात्र हैं। वे नहीं जानते कि सचाई देशी-विदेशी नहीं हुआ करती। मोण्टीसोरी-पद्धति के सिद्धान्त सर्वव्यापी हैं। वे किसी व्यक्ति या राष्ट्र की बपौती नहीं हैं। गत चालीस वर्ष से मोण्टीसोरी-पद्धति हमारे देश में प्रचलित है। बाल-जगत् की जो असीम सेवा इस पद्धति ने की है, उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। इसलिए विदेशी पद्धति बतला कर इस का बहिष्कार करना अपने पाँव पर आप ही कुल्हाड़ी मारना है।

[३]

इस पद्धति के बारे में कुछ लोगों ने धारणा बना ली है कि यह पद्धति साधारण (नार्मल) बालकों के लिए नहीं; बल्कि असाधारण (एबनार्मल) बालकों के लिए निर्मित की गई है। इसलिए साधारण बालकों के लिए यह किसी काम की नहीं है। जो इस पद्धति के बारे में ऐसी धारणा रखते हैं, वे इस पद्धति को ज़रा भी नहीं समझते। ऐसा लगता है कि उन्हों ने इस पद्धति का बिल्कुल अध्ययन नहीं किया है। इधर-उधर से कुछ सुन-सुना कर उन्हों ने अपना मत बना लिया है। बात यह है कि आरम्भ में इस पद्धति का प्रयोग असाधारण बालकों पर ही किया गया था। लेकिन बाद में जब साधारण

बालकों पर इस का प्रयोग किया गया, तो उन के लिये भी यह अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुई। इस नई दिशा में जो परिणाम इस पद्धति ने दिखाये, वे सचमुच आश्चर्यजनक थे। यही कारण है कि बाल-शिक्षा के लिए यह पद्धति आज इतनी सर्वप्रिय बन गई है।

[४]

इस पद्धति के सम्बन्ध में कुछ लोगों ने यह भ्रम फैला रखा है कि यह बालकों को सामाजिकता से दूर ले जाती है और व्यक्तिवाद का पोषण करती है। जो इस पद्धति का थोड़ा भी ज्ञान रखते हैं, उन्हें ऐसे आलोचकों पर हँसी आये बिना न रहेगी। सामाजिकता इस पद्धति का प्राण है। जिस दिन से बालक शाला में कदम रखता है उसी दिन से वह सामाजिकता का पाठ पढ़ने लगता है। मोण्टीसोरी सिद्धान्तों पर सञ्चालित शाला में सब बालक एक साथ नाश्ता आरम्भ करते हैं और एक साथ उठते हैं। सामूहिक खेलों में सब बालक भाग लेते हैं। सब मिल कर गायन गाते हैं। सब मिल कर अनेक प्रवृत्तियाँ करते हैं। मोण्टीसोरी शाला में एक भी ऐसी प्रवृत्ति नहीं मिलेगी, जिसमें सामाजिकता का ध्यान न रक्खा जाता हो। साधनों के उपयोग में भी सामाजिकता

का विशेष रूप से खयाल रखा जाता है। जब एक बालक एक साधन पर काम कर रहा है, तो दूसरा बालक किसी भी हालत में उस साधन को नहीं ले सकता। उसे उस समय तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है, जब तक कि पहला बालक अपनी प्रवृत्ति को पूरा न कर ले। इस प्रकार मोण्टीसोरी-पद्धति में सामाजिकता कूट-कूट कर भरी पड़ी है। मोण्टीसोरी-पद्धति बाल-शिक्षा के द्वारा सारे समाज को बदलना चाहती है। एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहती है, जिस में सब भाई-भाई की तरह मिल कर रहेंगे और कोई किसी का शोषण नहीं करेगा। ऐसी हालत में इस पद्धति को सामाजिकता का विरोधी बताना हास्यास्पद लगता है। अब रहा सवाल व्यक्तिवाद को प्रोत्साहन देने का। जो पद्धति समाज को सर्वोपरि स्थान देती है, समाज का उत्थान चाहती है, समाज में क्रांति फैलाना चाहती है, वह पद्धति व्यक्तिवाद का पोषण कैसे कर सकती है? हाँ, यह ठीक है कि यह पद्धति व्यक्तिगत शिक्षा में विश्वास रखती है। यह सब बालकों को एक ही साँचे में ढालना नहीं चाहती। इसलिए सब बालकों को उन की रुचि और वृत्ति के अनुसार शिक्षा देने की व्यवस्था करती है। इसे हम व्यक्तिवाद नहीं

कह सकते। व्यक्तिगत शिक्षा का व्यक्तिवाद से कोई सम्बन्ध नहीं हो सकता। लेकिन इस का यह मतलब नहीं निकालना चाहिए कि यह पद्धति बालक के व्यक्तित्व की उपेक्षा करती है। बालक के व्यक्तित्व का सम्मान करना तो इस पद्धति का मुख्य काम है। इस प्रकार यह पद्धति बालक के व्यक्तित्व के विकास के साथ-साथ सामाजिकता का विकास भी करती है।

[५]

कुछ लोग इस पद्धति पर यह दोष लगाते हैं कि यह बालक की सब इंद्रियों का विकास एक साथ नहीं करती। जो ऐसा कहते हैं, वे यह नहीं जानते कि बचपन में बालक की इंद्रियाँ अलग-अलग काम करती हैं। अगर बालक देखता है तो सुनता नहीं है, और सुनता है तो देखता नहीं है। इसी तथ्य को दृष्टि में रख कर मोण्टीसोरी-पद्धति में प्रत्येक इन्द्रिय के विकास के लिए भिन्न-भिन्न साधन बनाये गये हैं। इस से बालक की सब इन्द्रियों का बड़ी तेजी से विकास होता है। इसलिए प्रत्येक इन्द्रिय का अलग-अलग विकास करना इस पद्धति का गुण है, दोष नहीं।

[६]

कुछ शिक्षा-शास्त्रियों का इस पद्धति के बारे में यह भ्रम है कि यह पद्धति बालकों को परियों की कहानियों से वंचित रख कर उन की स्वाभाविक वृत्ति पर कुठाराघात करती है। ये शिक्षा-शास्त्री ऐसा मानते हैं कि अन्य वास्तविक कहानियों की अपेक्षा परियों की कहानियों में बालक अधिक दिलचस्पी रखते हैं। इसलिए परियों की कहानियों से उन्हें वंचित रखना उन के साथ अन्याय करना है। लेकिन यह बात सही नहीं है। यह कहना कि बालक वास्तविक कहानियों और घटनाओं में दिलचस्पी नहीं लेते, बिल्कुल निराधार है। मैं अपने अनुभव क आधार पर कह सकता हूँ कि बालक पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों नदी-नालों, नित्य प्रति उन के आस-पास घटनेवाली घटनाओं, बड़ों और बच्चों की जीवनियों तथा वैज्ञानिक कहानियों में बड़ा रस लेते हैं, और उन्हें बड़े चाव से बार-बार सुनते हैं। ऐसी कहानियों से बालकों के ज्ञान में वृद्धि होती है, उन की कल्पना-शक्ति बढ़ती है। इस के विपरीत परियों की कहानियाँ बालकों को वास्तविकता से दूर ले जाती हैं। ऐसी कहानियाँ सुन कर वे कल्पना-जगत् में रहने लगते हैं। ऐसी कहानियों का बालकों के भावी जीवन

पर बड़ा बुरा असर पड़ता है। बड़े होने पर भी वे अवास्तविक और काल्पनिक साहित्य को ही पसन्द करते हैं। गंभीर और वैज्ञानिक साहित्य से वे कोसों दूर भागते हैं। जिन बालकों ने बचपन में परियों आदि की कहानियाँ सुनी या पढ़ी हैं, वे आज भी इन कहानियों के सिवाय और कुछ नहीं पढ़ते। इसलिए मोण्टीसोरी-पद्धति में वास्तविक और वैज्ञानिक कहानियाँ तथा घटनाओं आदि पर अधिक जोर दिया जाता है।

[७]

इस पद्धति के विषय में कुछ लोगों का ऐसा भ्रम है कि यह बौद्धिक शिक्षण पर जरूरत से ज्यादा जोर दती है और खेलों की उपेक्षा करती है। जिन लोगों ने मोण्टीसोरी-पद्धति का अध्ययन किया है, वे जानते हैं कि मोण्टीसोरी-पद्धति बालकों पर ऊपर से कुछ भी नहीं लादती है, वह केवल समग्र ज्ञान के मूल तत्त्वों का वातावरण निर्माण करती है और फिर इस में से बालकों को जो अच्छा लगे उसे ग्रहण करने की स्वतन्त्रता प्रदान करती है। इसलिए किसी विशेष चीज पर जोर देने का सवाल ही पैदा नहीं होता। मोण्टीसोरी-पद्धति लिखाने-पढ़ाने की पद्धति नहीं है। यह तो जीवन-विकास की पद्धति है।

यह पद्धति खेल और पढ़ाई में कोई भेद नहीं करती। इस पद्धति की यह मान्यता है कि जब बालक पढ़ते हैं तो खेलते हैं, और खेलते हैं तो पढ़ते हैं। इसलिए अधिक पढ़ाई और कम खेल की समस्या ही इस पद्धति में पैदा नहीं होती।

[८]

कुछ लोगों का खयाल है कि यह पद्धति जरूरत से ज्यादा आज़ादी दे कर बालकों को बिगाड़ती है, उन्हें उच्छृङ्खल बनाती है, मनमानी करने की खुली छुट्टी देती है। जिन्हों ने इस पद्धति को नहीं समझा है या जिन्हों ने शुद्ध मोण्टीसोरी सिद्धान्तों पर संचालित शाला को नहीं देखा है, वे ही ऐसी शिकायतें करते और शंकाएँ उठाते हैं। मोण्टीसोरी-पद्धति में उद्दण्डता या स्वतन्त्रता के दुरुपयोग के लिए कोई स्थान नहीं है। मोण्टीसोरी-पद्धति किसी भी हालत में बालकों को मनमानी करने की इजाजत नहीं देती। मोण्टीसोरी पद्धति सुनियन्त्रित स्वतंत्रता को मानती है, उच्छृङ्खलता को नहीं। इसलिए जब बालक कोई अनुचित काम करते हैं, नागरिकता के नियमों का उल्लंघन करते हैं, या अपने साथियों के काम में विघ्न डालते हैं, तो उन्हें ऐसा करने से फौरन रोक दिया जाता है।

[६]

मोण्टीसोरी-पद्धति के विषय में यह भी कहा जाता है, कि इस में शिक्षक को कुछ करना-धरना नहीं पड़ता। उस का काम तो दूर बैठे-बैठे केवल बालकों का अवलोकन करना है। उसे न अध्ययन की जरूरत है और न अनुभव की। केवल एक-दो पुस्तकें पढ़ लेने और साधन मँगवा कर शाला खोल देने से काम चल जाता है। जो ऐसा सोचते हैं, वे मोण्टीसोरी-पद्धति का क, ख, ग भी नहीं जानते। मोण्टीसोरी-पद्धति के शिक्षक को कितना काम करना पड़ता है, उसे मोण्टीसोरी शाला का शिक्षक ही जानता है। जो शिक्षक अपना सारा समय और शक्ति इस काम में नहीं लगा सकता, वह मोण्टीसोरी शाला का शिक्षक बन ही नहीं सकता। जो साधक है, जिस ने बाल-सेवा को अपने जीवन का ध्येय बना लिया है, वही मोण्टीसोरी शिक्षक बन सकता है। केवल एक-दो किताबें पढ़ लेने या तीन महीनों की ट्रेनिंग ले लेने से कोई मोण्टीसोरी शिक्षक नहीं बन जाता। जिन्हें भ्रम हो गया है, उन्हें इसे अपने दिल से निकाल देना चाहिए।

मोण्टीसोरी-पद्धति के विषय में और भी कुछ धारणायें प्रचलित हैं। लेकिन उन सब पर प्रकाश डालना

संभव नहीं है। जो मोण्टीसोरी-पद्धति को समझना चाहते है, उन्हें मोण्टीसोरी-पद्धति पर लिखी हुई डॉक्टर मोण्टी-सोरी की वे पुस्तकें पढ़नी चाहिएँ जिनकी सूची नीचे दी जा रही है।

माता मोण्टीसोरी द्वारा लिखित कुछ पुस्तकें:—

1. The Absorbent mind. 18|-|-
2. The Discovery of The Child. 16|8|-
3. Education of the Human Potential. 5|-|-
4. Education For a New World. 4|-|-
5. The Secret of Childhood. 6|-|-
6. The Advanced Montessori Method. Part I
7. The Advanced Montessori Method. Part II

नोट (१) ये पुस्तकें निम्नलिखित पते पर मिल सकती हैं —

The Theosophical Publishing House,
Adyar, (Madras—20).

नोट (२) जो अंग्रेजी न जानते हों वे श्री गिजुभाई द्वारा लिखित उन की गुजराती पुस्तकें पढ़ें।

नोट (३) जो अंग्रेजी और गुजराती नहीं जानते व "हिन्दी शिक्षण पत्रिका" की पुरानी फाइलें मंगवा कर पढ़ें। फाइलें मिलने का पता—

शिक्षण पत्रिका, कार्यालय

११८, हिन्दू कॉलोनी, दादर, बम्बई १८।

मोण्टीसोरी-पद्धति के आधार पर चलनेवाले बाल-अध्यापन केन्द्रों के नाम:—

१. सेण्टर ऑफ कॉस्मिक एजूकेशन, ६ मालवीय रोड, जार्ज टाउन, इलाहाबाद।

२. शिशुविहार, बाल अध्यापन मंदिर, ११८ हिन्दू कॉलोनी, दादर, बम्बई १८।

३. दक्षिणामूर्ति, बाल अध्यापन मंदिर, भावनगर।

४. बाल अध्यापन मंदिर, पागनीस मागा, इंदौर शहर।

५. ग्राम बाल अध्यापन मंदिर, बोर्डी, जि० थाना (बंबई राज्य)

इन के अलावा डॉक्टर मोण्टीसोरी के प्रतिनिधि श्री यूस्टन भिन्न-भिन्न स्थानों पर अपना ट्रेनिंग कोर्स चलाते हैं।

—:०:—